प्रांजलि

आध्यात्मिक प्रार्थनाएं

रचनाकार

सुरेश चौधरी 'इंदु'

शुक्तिका प्रकाशन

प्रांजलि

ISBN : 978-93-94660-11-3

प्रकाशक :
शुक्तिका प्रकाशन
स्वामित्व : ए एंड ए इंटरप्राईजेज
पी 516/4, बी.एल. साहा रोड
कोलकाता–700038
मो. : 8582965531

रचनाकार : **सुरेश चौधरी 'इंदु'**

प्रथम संस्करण : 2012
द्वितीय संस्करण : 2014
तृतीय संस्करण : 2023

©सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 250/–

शब्द सज्जा : परमानंद झा, मो. : 95550–21641

A BOOK BY SURESH CHOUDHARY 'INDU'
FOR SPRITUAL POETRIES

समर्पण

पूज्य पिताजी

स्व. श्री भोलाराम जी चौधरी

को

भावपूर्ण समर्पित

मेरी प्रांजलि...!

हे तात!
शैशव में
जब हो चैतन्य समझा मैंने संसार,
नन्हें कदमों का पथ प्रशस्त कर
सौंपा लक्ष्य अपार
लक्ष्य निर्धारित कर
जीवन गति दी अबाध,
'शिक्षा ही पूंजी है'
महामंत्र दिया आपने
आलोकित किया
जीवन का पूर्वार्ध।
हाय!
क्यूँ इतनी जल्दी चले गए,
छोड़ असमंजस में निपट अकेला
किस लोक आप चले गए।
अश्रुपूरित नैनों से
मांग रहा यह पुत्र,
आशीर्वाद दें
पूर्ण हो जीवन सूत्र॥
लाया मैं निज भावों की श्रद्धांजलि,
करता अर्पित चरणों में यह प्रांजलि॥

❖❖❖

दो शब्द

प्रांजलि मेरी लिखी हुई पहली पुस्तक है जो प्रकाशित हुई थी। इसके पहले 'तिमिर ढलेगा' प्रेरक कविताओं की पुस्तक लिखी थी, परन्तु वह बहुत बाद में प्रकाशित हुई थी। इससे पहले प्रकाशित होने वाली पुस्तक 'श्री दुर्गतिविनाशनी' थी, परंतु वह श्री दुर्गा सप्तशती का भावानुवाद थी। अत: तकनीकी रूप से यह मेरी लिखी पहली पुस्तक थी। आज इसका तीसरा संस्करण आ रहा है, यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष की बात है। प्रथम संस्करण पर बाल व्यास पंडित श्रीकांत शर्मा जी ने आशीर्वचन दिए थे, द्वितीय में 'संस्कार पत्रिका' के तत्कालीन संपादक सर्वेश सक्सेना जी ने दो शब्द लिख कर मुझे कृतार्थ किया।

यह पुस्तक बहुत पसंद की गई, विशेष आनंद तो तब मिला जब मैंने इसे नियमित रूप से एक कॉम्पलेक्स में सुबह गीत की क्लास के बाद लोगों को पढ़ते देखा, तब लगा मेरा लिखना सार्थक हो गया। एक वाक्या और हुआ, एक बालकों की काव्य प्रतियोगिता में मुझे अकस्मात बुलाया गया, वहां किसी लेखक की रचना का पाठ पढ़कर बालक को सुनना था, एक बालक जो नौवीं कक्षा का विद्यार्थी था ने 'प्रांजलि' की रचना पढ़ कर सुनाई और जब उससे पूछा गया कि क्या वह इसके लेखक को जानता है तो उसने ना कही। जब उसे बताया गया कि इसके लेखक निर्णायक मंडल में बैठे हैं तो उसे जितना आश्चर्य हुआ, उससे ज्यादा हर्ष मुझे हुआ। माँ सरस्वती की असीम कृपा है जो इतना स्नेह मिलता है। इस संस्करण में कोई त्रुटि रही हो तो सूचित कीजिएगा। आध्यात्मिक प्रार्थनाओं की श्रृंखला में प्रांजलि-2 और प्रांजलि-3 शीघ्र आ रही है।

आपका स्नेही

सुरेश चौधरी

(पुरषोत्तम मास कृष्ण पक्ष एकादशी संवत् 2080)

प्रांजलि की प्रार्थनाएं

प्रांजलि की प्रार्थनाएं आध्यात्मिक यात्राओं में सहायक सिद्ध होगी। कलाओं में सबसे उत्तम ललित कलाएं हैं। ललित कला अर्थात् वे कलाएं जिनकी सुन्दरता, मौलिकता एवं सजीवता से दर्शक अथवा श्रोता मन्त्र-मुग्ध हो जाएँ। ललित कला का संबंध हमारे मानसिक एवं काल्पनिक जीवन से है। ये कलाएं अवकाश के समय हमारे जीवन को अनुप्रेरित करती हैं व कुछ समय के लिए हमें एक ऐसी लोकोत्तर अवस्था में पहुंचा देती हैं, जिसे 'ब्रह्मानंद सहोदर' कहा गया है। ललित कला में से एक है- काव्यकला। मनुष्य अपने भावों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। प्रत्येक शब्द किसी न किसी भाव का प्रतीक है। अत: भाव को ही कवि भाषा में व्यक्त करता है। इस प्रकार शब्द ही काव्यकला का आधार है। काव्यकला की तुलना, मात्र संगीत से ही हो सकती है, क्योंकि ललित कलाओं में ये दोनों ही गतिशील कलाएं हैं। पर इस विचार के इतर एक अन्य विचार, जो संभवत: अधिक प्रौढ़ है कि कला एक अखंड अभिव्यक्ति है, उसे खंडित करना नामुमकिन है। रचनाकार अपनी मानसिक अभिव्यक्ति को भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त करता है। यही मानसिक अभिव्यक्ति कला का बाहरी रूप धारण करती है। इस बाहरी रूप को धारण करने के लिए कभी-कभी बाहरी उपकरणों का सहारा लेना पड़ता है। मेरे विचार में रचनाकार जितने कम बाहरी उपकरणों का प्रयोग करेगा, कला उतनी ही श्रेष्ठ होगी। रचना से प्राप्त आनंद

जितने समय स्थिर रह सकेगा वह उतनी ही श्रेष्ठ होगी। काव्य की अभिव्यक्ति के लिए न ईंट-पत्थर की, न छैनी-हथौड़े की और न रंग-तूलिका की आवश्यकता होती है। सिर्फ-ओ-सिर्फ शब्दों के सहारे ही काव्य गठित होता है। इस संबंध में शब्द भी बाह्य उपकरण हुए, किन्तु ये न्यूनतम उपयोग है। अपने अंतस में उमड़े भावों का यदि कोई ग्राफ तैयार किया जाये तो किसी न किसी भाषा की आवश्यकता अवश्य ही होगी। इस संबंध में श्री सुरेश चौधरी, जिन पर माँ सरस्वती की असीम कृपा है, ने लोक से लोकोत्तर की यात्रा का अनुभव अपनी इस पुस्तक में प्रार्थनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है और न्यूनतम उपकरण का उपयोग सम्यक तरीके से किया है। जब श्री चौधरी कुछ रचते हैं तो शब्द, उनके मनोभावों का आकार स्वयं ग्रहण करते हैं।

प्रत्येक मनुष्य काव्य का रचनाकार नहीं हो सकता, इसलिए वो अपने मनोभावों के निकटतम भावों की रचना से अभिभूत होता है और समझता है कि ये रचना उसने स्वयं रची है। सनातन धर्म में जड़ता कभी नहीं रही और इस जगत से उस जगत की यात्रा के अनुभव और उस यात्रा में काम आने वाले सभी उपकरणों को शेयर किये जाने की परंपरा भी रही है। अत: इस संबंध में श्री चौधरी की भावों में डूबकर, उन्हें अनुभूत कर रची 'प्रांजलि' की प्रार्थनाएं सभी जनों की आध्यात्मिक यात्रा में सहायक सिद्ध होगी।

साभार

वीरेन्द्र गोस्वामी

अनुक्रमणिका

1.	अशांत जिंदगी के शांत पल	11
2.	आ इन पाषाण-मंदिरों से बाहर आ	12
3.	आ पिला मधुर सुधा-रस	13
4.	आप करुणा के सागर	14
5.	आपका ही एक अंश हूँ प्रभु	15
6.	आपकी कृपा अपरम्पार	16
7.	आपने तीन गुणों से तिरोहित किया	17
8.	आभार	18
9.	इस कालिमा को दूर करें	19
10.	मोक्ष का अनमोल रत्न	20
11.	कर मार्ग तू प्रशस्त	21
12.	कृपा इतनी कर	22
13.	कृपा बनाये रहें	23
14.	चाहता हूँ दर्शन करूँ	24
15.	चित्रकार	25
16.	जिजीविषाम:	26
17.	जीवन को कर्म-योग से कृतार्थ कीजिये	27
18.	जीवन ज्योत कर आलोकित	28
19.	जीवन सक्षम बनाऊँ	30
20.	तरस रहे मेरे नैन	31
21.	तूने बहुत दिया	32
22.	तू क्यूँ रुठा है, अब तो आ	33
23.	तेरी शरण रहूँ	34
24.	दूर कर मन की निराशा	35
25.	दे नव-जीवन को नया आयाम	36
26.	दे रहे नव-प्रकाश	37
27.	नयी यात्रा का उद्घोष हो चुका है	38
28.	निवारण कर कष्ट	39
29.	परम आनंद प्रदान करें प्रभु	40
30.	पुण्य धरा मातृभूमि को नमन	41
31.	पुनर्व्यवस्थित कर	42

32.	प्रभु मुझे आत्म-परायण बन	43
33.	प्रभु मेरे अंतर्मन को आलोकित करे	44
34.	मोती चुन कर मुझे लाना है	45
35.	विकल्प रहित संकल्प करें हम ध्येय प्रथम	46
36.	विरक्त न मन तुझसे करना	47
37.	सत्य को मुझमें स्थापित करो नाथ	48
38.	सूर्यदेव को नमन	49
39.	हे प्रभु कुछ ऐसा ज्ञान दे	50
40.	हे माँ पद्मासनस्थिते!	51
41.	हे मेरे चंचल मन!	52
42.	हे सखा!	53
43.	हे सर्वज्ञ शिव!	54
44.	है मेरा मन अशांत	55
45.	हे, जगत स्वामी!	56
46.	हो प्रभु आपकी छत्र-छाया मेरी हर उन्नति में	57
47.	प्रार्थना बस इतनी भगवन!	58
48.	बस इतनी सी चाह	59
49.	भुवन भास्कर	60
50.	मत होने दे मुझे आज निराश	61
51.	मनुष्य हूँ मनुष्य बना रहूँ	62
52.	माँ जल्द आ रक्षा करो	63
53.	मुझे निष्काम भक्ति दें	64
54.	मुश्किलों का हो तर्पण	65
55.	मेरा कैसा हो कल्याण	66
56.	मेरे अंतर्मन को आलोकित कर	67
57.	हे जगन्नाथ!	68
58.	मैं अज्ञान के अंधकार में उत्पन्न हुआ था	69
59.	मैं आपका आभारी हूँ	70
60.	मोक्ष प्राप्त करूँ	71
61.	हे प्रियतम! वारिद स्वत:	72
62.	मेरे अंदर ब्रह्म ज्योत जलाएं प्रभु	73
63.	मन शुद्ध करना चाहता हूँ	74
64.	मन का दर्पण	75
65.	भवसागर पार करना चाहता हूँ	76
66.	ब्रह्म-ज्योति में विलीन कर	77

67.	पतित जीवन को आलोकित करें	78
68.	डोलती नैया को पार लगाना होगा तुझे	79
69.	ज्ञान यज्ञ का प्रारंभ हुआ	80
70.	खोई सभ्यता	81
71.	काष्ट की देह में मोह की दीपक लगी है	82
72.	मोक्ष का अनमोल रत्न	83
73.	एक ही राह	84
74.	उद्यात-शुद्ध-ज्ञान का हो दर्शन	85
75.	इस अवगुंठन को दूर करें	86
76.	आप परम आद्य ज्ञेय निहित	87
77.	असमंजस एवं भय को दूर करें	88
78.	अमृतधारा का उत्सर्जन कर	89
79.	अभिलाषा	90
80.	अज्ञान के सागर को निश्चय ही पार कर सकूँगा	91
81.	अज्ञान का निवारण करो	92
82.	आप मुझे जागृत करें	93
83.	तन शांति का अनुभव करे	94
84.	मानव बनाना चाहता हूँ	95
85.	परिवर्तन	96
86.	मेरे भाव प्रभुमय हो जावें	97
87.	मोह की कलुषता दूर कर	98
88.	मोह वन में भटक रहे हैं	99
89.	राग द्वेष के दो	100
90.	शुद्ध भावनाएं प्रज्ज्वलित हों	101
91.	संसार-वन में दौड़ती	102
92.	समभाव के दर्शन की इच्छा है	103
93.	हे परम पिता परमेश्वर!	104
94.	हे महादेव पुन: नीलकंठ कहलाना है	105
95.	हे महादेव हमें शरण में लें	106
96.	त्रिवर्गीय संतुलन में बनाये रखें	107
97.	हे शांतिदूत!	108
98.	मैं क्षणिक विमुख तो हुआ	109
99.	ह्दय की घोर जड़ता पर प्रहार करिए	110
100.	चपला की चलायमान	111
101.	हे प्रभु समस्त संताप हरो	112

❖❖❖

1. अशांत जिंदगी के शांत पल

हे देवेश्वर!
जलधि की लहरों
से असीमित
विचारों को
अंजलि में समेट
आचमन कर लूँ,
उड़ते खग की
अबाध गति से,
अपरिमेय चंचल मन को
केन्द्रित कर लूँ,

रेगिस्तान में विचरती
मृग-मरीचिका सी,
अशांत जिंदगी के
शांत पल संग्रहीत कर लूँ,

पाऊं तुम्हें हर क्षण,
गुणों के भवसागर हो तुम,
इतनी कृपा करो,
जीवन तुम्हें
समर्पित कर दूँ।

❖❖❖

2. आ इन पाषाण-मंदिरों से बाहर आ

हे मेरे जग-स्वामी!
आ इन पाषाण-मंदिरों से बाहर आ,
अर्चनाएं बहुत हो चुकी,
पुष्प चढ़ चुके सहस्त्रों कदाचित,
देख सेवक तेरा है दुखित-तृषित,
मनन पठन से दूर
चिंतन कर,
स्वामी चिंतन कर,
सभी कष्टों का निवारण कर।

बाल्य-पन से आज तक का जीवन,
संग्रहीत कर-कर थक चुका,
आ इसे अब संवार,
बहुत लंबी यात्रा तय कर चुका,
अंत-मोड़ पर आ इसे संभाल।
शांत मृत्यु का हो वरण,
कर जीवन तरन,
ले शरण।

❖❖❖

3. आ पिला मधुर सुधा-रस

हे प्रियतम!
थक गए,
देख राह नयन,
करने को तेरा दर्शन,
शीघ्र मिलो सजन,
आ पिला मधुर सुधा-रस,
बेकल आत्मा,
समाहित कर निज वश।

हे स्वामी!
तृषित तन की प्यास मिटा,
असमंजस कयास मिटा,
बरसा चन्दन-सा शीतल नेह,
विलीन हो तुझमें तपिश देह।
तू ही परमानंद,
तू ही अनन्त आनंद,
तू ही मन-स्वामी,
तू ही तन स्वामी,
ग्रहण कर, बना अदेह।

❖❖❖

4. आप करुणा के सागर

हे कृपानिधान!
आप करुणा के सागर,
जब-जब भक्तों की पुकार हुई,
आ आपने भरी श्रद्धा गागर,
गजेन्द्र को ग्रह से बचाया,
बचाई द्रोपदी की भरी सभा में लाज,
नानी बाई को मान दे,
नारसिजी के किये पूर्ण काज
हे करुणासागर,
मैं खल पुरुष,
स्वयं भू बना अभिमान में चूर,
कामना-वासना से भरपूर,
लायक नहीं की,
आप मेरी भी सुने,
परन्तु दयानिधि,
हे सर्वज्ञाता,
ज्ञान-दीप जला,
मेरे कर्म को प्रच्छालित करें,
मुझे शरण ले क्षमा करें।

❖❖❖

5. आपका ही एक अंश हूँ प्रभु

हे नाथ!
जीवन-मरण की विषम स्थिति में
क्यूँ डाला गया मैं,
जिज्ञासा है।
मेरी इस कष्ट की अनुभूति का रहस्य ज़्या है,
जिज्ञासा है।
जिज्ञासाओं का समुचित समाधान तो
आप हैं प्रभु।
निष्ठावान यह बालक
प्रकृति-काल-कर्म की गति के अनुकूल,
जीवन नियंत्रित करने को आतुर है।
प्रभु ज्ञान दें।।
इस कठपुतली बनी आत्मा का विग्रह कर
स्व-चालित करें,
आपका ही एक अंश हूँ प्रभु,
इस अंश की
पंच विकारों से रक्षा करें।

❖❖❖

6. आपकी कृपा अपरम्पार

हे नाथ!
आपकी कृपा अपरम्पार,
आपने किये अनेकों उपकार,
नाथ! जीवन का सायं काल आ चुका,
बाल काल से सायं काल तक,
कर्म-पाश से बंधा फिर रहा,
त्रिविध शरीर से शुभाशुभ कर्मों को कर रहा,
चक्रवत भ्रमण कर रहा,
प्रभु, इन महा-पाशों से,
मुक्त करें,
शरण लें, ताकि
आपकी आराधना,
आपका स्तवन,
यथावत कर सकूँ,
ऐसा ही वर दीजिये।

❖❖❖

7. आपने तीन गुणों से तिरोहित किया

हे पुरुषोत्तम!
आपने तीन गुणों से तिरोहित किया,
जीवन अभय बनाने हेतु
यह मानव तन भी दिया,
गुणों के आसव को मानकर
यह शरीर भी गुणायुक्त हुआ।

सत्व गुण तो अमरत्व का प्रतीक
विशुद्ध एवं आभावान,
ज्ञान एवं खुशियों का भण्डार,
सुगढ़ आशावान।

रजस तत्व लालसा कामना को लिए
असत्य एवं अस्थिरता का उपासक,
तमस मात्र विकृतियों का ढेर,
आलस्य-अज्ञान-असफलता का सृजक।

हे प्रभु मेरे गुणों को संतुलित कर,
मुझे हर्ष-उल्लास-ज्ञानोचित संस्कार दे।
मेरे सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण
पर विजय प्राप्त करें।
प्रभु आशीष दें।

❖❖❖

8. आभार

हे सर्वज्ञाता!
आपने सकल भौतिक पदार्थ दिए,
मैं आभारी हूँ।
रेगिस्तान की तपती रेत पर,
शीतल वारि-बूंदों से तृप्त कर
आपने समस्त कष्टों का निवारण किया
सागर के झंझावातों में डोलता,
अस्थिरता के मध्य स्थिरता खोजता,
यहां वहां भटक रहा था,
आपने हर क्षण सहारा दे,
मुझे किया स्थापित,
मैं आभारी हूँ।

हे नाथ,
निरंतर आपकी शरण में रहूँ,
बस यही चाह,
कुरीतियों का हो शमन,
भ्रांतियों का हो दमन,
करता रहूँ आपके चरणों का नमन,
बस यही चाह।

❖❖❖

९. इस कालिमा को दूर करें

हे जग स्वामी!
मैंने अनेकों अक्षम्य किये पाप,
शीघ्रातिशीघ्र आ इन्हें क्षमा करें आप,
अज्ञान के सूत्र से बंधा मेरा चरित्र,
क्रोध में वशीभूत,
मोह में आसक्त,
सब शिक्षाओं को भूल,
नियंत्रण खो उठा,
मेरे मस्तिष्क को
शांत करें,
संतुलित करें,
मुझ पर उपकार करें।
ज्यूँ मेघों की काली घटा,
क्षण भर के लिए व्योम पर
आच्छादित हो
अन्धकार ला देती है,
वैसे ही,
मुझ अल्पज्ञानी के पटल पर
क्रोध-मोह की काली-घटा छाई हुई है,
प्रभु शीघ्र पधार कर ज्ञान दें
इस कालिमा को दूर करें,
शरण में लें।

❖❖❖

10. मोक्ष का अनमोल रत्न

हे गोविन्द!
कनक तप-तप चमकता है,
चन्दन घिस-घिस महकता है,
दही मथ-मथ मक्खन बनता है,
प्रभु आप में डूब-डूब ज्ञान मिलता है।

मैं प्रभु आत्म-चिंतन कर
आप में डूब जाना चाहता हूँ,
जीवन के इस समुद्र मंथन में,
मोक्ष का अनमोल रत्न
प्राप्त करना चाहता हूँ।

पंच तत्वों से निर्मित यह तन,
पंच तत्वों में विलीन होना चाहता
समग्र साधनाओं से समाहित,
यह आत्मा अब आपमें,
प्रवेश कर जाये
कामना यह स्वीकार करें प्रभु।

❖❖❖

11. कर मार्ग तू प्रशस्त

हे नाथ!
यह सेवक विचलित हो रहा,
क्रोधांग्नि में भस्म हो रहा,
विवेकहीन हो रहा, अहम् से सम्मोहित,
बुद्धि विनाश हो रहा!

हे प्रभु!
मति हो रही मंद, है स्मृति क्षीण,
आँखें हो रही बंद शिथिल समूचा तन है,
अशांत मेरा मन है!

हे दयानिधि!
घनघोर काली घटाओं को चीर,
चमक चपल सौदामनी बन,
कर मार्ग तू प्रशस्त, रहे वर्षा दया की सदा
हरित हो तन-मन!

हे दाता! दे इतना,
धन्य मैं हो जाऊँ क्रोध पर विजय पाऊँ
विस्मृत बुद्धि को दूर भगा गीत अभय गाऊँ!

हे गोविन्द! ले शरण अपनी,
क्रोध-हर दे कर्मयोग का ज्ञान
विचलित न होऊं हर सारा अज्ञान!

❖❖❖

12. कृपा इतनी कर

हे कृपालु!
कृपा इतनी कर, रहे दया-दृष्टि सदा,
दूर गगन में आच्छादित राका-पुंज सम्पदा,
मन-शीतल कर
हटाये निज-हृदय आपदा,
कृपा इतनी कर,
हे दयावान!
दया दिखा, दिवाकर का प्रकाश,
जीवन में प्रवेशित हो,
अंध-मार्ग आलोकित हो,
मन प्रफुल्लित हो, कृपा इतनी कर,

हे नाथ!
चन्द्र-कला सा घटता बढ़ता अंतस,
संभाल उसे,
शशि-प्रभा प्रदान कर,
कर इसे नियमित,
कर संसार आनन्दित,
हो प्रसन्न चित,
कृपा इतनी कर।

❖❖❖

13. कृपा बनाये रहें

हे परमेश्वर!
आपकी कृपा से,
कर्मशील हूँ, गतिशील हूँ,
लक्ष्य निर्धारित करने में सक्षम हूँ,
निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति का
मार्ग भी बताया आपने।
जो ज्ञानेन्द्रियाँ दीं,
उसकी उपादेयता जान
कर्मेन्द्रियों पर विजय पाने का
योग भी सिखाया आपने।
राग-द्वेष रहित
निर्झर भाव जगाया आपने।

प्रभु!
मेरा हृदय-पटल,
आपके प्रेम-रस में डूबने को आतुर,
बस इसे गतिशील रखें,
कर्मेन्द्रियों को संयमित रखूं,
अपने भाव शुद्ध रखूं
कृपा बनाये रहें।

❖❖❖

14. चाहता हूँ दर्शन करूँ

हे नाथ!
तू है सभी के जीवन का भरता,
देदीप्यमान ज्योति आवरण से ढका
अद्भुत स्वरूप तेरा,
हटा इस आवरण को,
मैं विशुद्ध भक्त तेरा,
दर्शन दे
हो जीवन सवेरा।

हे आदिज्ञानी!
लक्ष्य रूप तू,
हटा अपनी तेज दिव्य किरणों को,
चाहता हूं दर्शन करूँ,
आनंदमय रूप तेरा,
तेरा-मेरा तो संबंध,
प्रकाशपुंज एवं प्रभा किरणों का।

❖❖❖

15. चित्रकार

हे रचियता!
अनुपम सृष्टि का चित्र बनाया आपने,
इन्द्रधनुषी रंगों से इसे सजाया आपने,
कलरव करते विहग,
गुंजन करते भ्रमर,
कल-कल करते जल-प्रवाह,
इन सुमधुर स्वरों से आनंदित किया आपने,
हरित वन-उपवन से रोमांचित किया आपने,
ये सुबह, ये शाम, इन लालिमा के दृश्यों से
आल्हादित किया आपने,
मनुष्य तन दे कृतार्थ भी किया,
प्रभु इतनी दया और कीजिये,
इस जीवन की उपादेयता दीजिए,
कर सकूँ कुछ ऐसा की,
जग में नाम हो,
विश्व कल्याण में मेरा भी हाथ हो,
हर पल नाथ तेरा साथ हो।

❖❖❖

16. जिजीविषाम:

हे जगत्पते!
जिजीविषाम:,
एक सुशुप्त ज्वालामुखी,
मेरे अन्दर दहक रहा है,
इसका लावा यदा-कदा फुट पड़ता है,
आ, इन्द्र धनुषी शीतल छटा बिखेर,
अंबर-अवनी को अपनी बांहों में समेट,
या तो ज्वालामुखी फट जाने दे,
या इसे शांत कर,
अकल्मष कर,
सौम्य मुखधारी
सौम्य कर। ❖❖❖

17. जीवन को कर्म-योग से कृतार्थ कीजिये

हे ज्ञानेश्वर!
दे गीता-ज्ञान,
निज धर्म पर सिखाया चलना,
सीखा शुभ कर्मों का वहन करना,
अभिभूत हुआ आनंद हृदयंगम,
सीख रहा आपकी कृपा से,
पार करना संसार सागर वृहज्ञम।

कभी वेदों के समुद्र में,
कभी पुराणों के मंथन में खोया था,
देकर आपने सब ग्रंथों का सार,
भक्ति सरोवर में किया सरोबार।

हे नाथ!
इस अज्ञानी,
को स्वर्णिम मार्ग बता आपने
सुख कल्याण शांति योग दिया
बस इतनी सी कृपा और कीजिये,
अपनी शरण में लेकर,
जीवन को कर्म-योग से कृतार्थ कीजिये।

❖❖❖

18. जीवन ज्योत कर आलोकित

हे नाथ!
है तू हृदय-पटल विराजित
स्थान तेरा ये,
तू ही कर इसे प्रफुल्लित,
इन दंगों में तू ही तू,
जीवन ज्योत कर आलोकित।

हे प्रभु!
नाश कर भय,
रक्षा कर ग्रसित बुराइयों से,
शक्ति दे! भक्ति दे!
संघर्षरत रहूँ,
चिंतनशील रहूँ,
हार न मानु आज विपज्ञियों से।

हे स्वामी!
हूँ शरण तेरी,
नहीं चिंता, चिंताओं-दुखों की,
शरण चाहता हृदय में बसने को,

संभाल मुझे नाथ आकर तू,
दिला आभास
मेरी भूलों का,
भय हर,
हूँ चरण तेरे सुधरने को।

हे प्रभु!
साहस दे, धैर्य दे,
लड़ सकूँ बाधाओं से,
हे नाथ!
ले थाम मुझे,
ज्ञान दे-भ्रम हटा,
निकाल घनी घटाओं से।

हे नाथ!
है तू हृदय-पटल विराजित
स्थान तेरा ये,
तू ही कर इसे प्रफुल्लित,
इन दंगों में तू ही तू,
जीवन ज्योत कर आलोकित।

❖❖❖

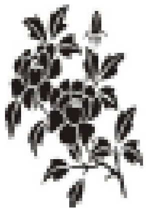

19. जीवन सक्षम बनाऊँ

हे नाथ!
ज्यों दावांग्नि पवन के संसर्ग से
अनिश्चित दिशा की ओर चल पड़ती है,
वैसे ही यह जीवात्मा
अपने कर्तव्य के पालन में सतर्क,
अनिश्चित शरीर का धारण करती है।
आत्म-साक्षात्कार कर्तव्य का
श्रद्धापूर्वक निर्वहन करते हुए,
परमात्मा में विलीन हो बनाऊँ।

ज्यूँ संसर्ग-संगति का प्रभाव
मलयगिरि के अन्य वृक्ष पर भी पड़ता है,
वैसे ही शरीर के पुनर्जन्म पर भी पड़ता है,
कंस उच्च राज वंश में उत्पन्न होकर भी
आसुरी संगति से असुर प्रवृति का बना,
प्रभु मुझे सद्बुद्धि दें
आपके दिए सदुपदेश को ग्रहण कर,
जीवन सक्षम बनाऊँ।

❖❖❖

20. तरस रहे मेरे नैन

हे मेरे नाथ!
तेरे दर्शन हेतु,
तरस रहे मेरे नैन,
व्याकुल-मन,
तुम आकर,
ज्ञान-सुधा-मान कराकर,
लाओ दिल में चैन,
तरस रहे मेरे नैन।

हे अन्तर्यामी!
प्रज्वलित कर,
भानु-सा दैदिप्त्य-मान ज्ञान,
केवल आप ही हैं अचल,
स्वामी विश्व सारा चलाचल,
कर शृंगारित अंतस विवेक से,
प्रभु भजन में बीते दिन-रैन,
तरस रहे नैन।

❖❖❖

21. तूने बहुत दिया

हे दया-निधि भगवन!
तूने बहुत दिया,
इन्द्रवीर-सा कोमल मन दिया,
चिंतन को,
सौदामनी-सा तेज मस्तिष्क दिया,
सुख पाने को,
चन्द्र-प्रभा-सा लावण्यमयी तन दिया,
आभा दी, धन दिया।

हे प्रभु मेरे,
फिर क्यूँ उदास हूँ, स्वप्न से उठ बार-बार
तुझे पुकारता हूँ, तेरी मधुरता को तरस रहा,
कर उत्कंठ हृदय, जीवन संवारता हूँ।

आ नाथ,
ग्रीष्म ऋतु से जीवन में आ,
सूखे पड़े इस मन में,
पावस की शीतलता ला।

फिर दे, जो तूने दिया,
उसका मान हो,
ज्ञान हो
ध्यान हो।

❖❖❖

22. तू क्यूँ रुठा है, अब तो आ

हे स्वामी!
सूने आँगन को आ सजा,
विरहाकुल नयन
मन को तड़पा रहे
तू क्यूँ रुठा है,
अब तो आ

हे प्रियतम!
इस डोली को ले चलने को,
अब तो चार कहार भी आ चले,
तेरे दर्शन को
दिन-रात बाट जोह
नैन भी थक चले,
कब आवोगे प्रियतम,
दरस दे अखियाँ तृप्त कर,
तू क्यूँ रुठा है,
अब तो आ।

❖❖❖

23. तेरी शरण रहूँ

हे ईश्वर!
इस दुखी अंतर्मन में समा,
सींच शीतल सलिल की फुहार,
दहक रही हृदयांग्नि को कर शांत,
चिज़ प्रसन्न कर,
तेरी शरण रहूँ,
न रहूँ और ज़्लांत।

हे प्रभु! तुझे इस शांत हृदय में रखूं विराजित,
तुम हो मेरे नाथ,
मैं तेरा सेवक
प्रभु यह मन तुझे अब अर्पित,
तू ही तू मेरे में
हो रहे समर्पित,
तू है धन्य,
नहीं कोई अन्य।

❖❖❖

24. दूर कर मन की निराशा

हे भक्त-वत्सल
मुझे भक्ति दे,
एक शक्ति दे,
दे, जीने की एक आशा,
एक आधार दे जीने का,
एक उद्देश्य दे जीने का,
दे जीने की अभिलाषा,
दूर कर मन की निराशा!

हे परमात्मा,
छोटी-छोटी दे खुशियाँ,
बाँट पाऊं दीनों की अनुभूतियाँ,
जीना हो सफलतापूर्ण,
मानव बने परिपूर्ण,
वासुदेव कुटुम्बकम,
की हो भावना,
हो यही जीवन कामना,
हो कामना!

हे भक्त वत्सल
भक्ति दे
शक्ति दे!

❖❖❖

25. दे नव-जीवन को नया आयाम

हे स्वामी!
मन तो चंचल है,
करता अतिक्रमण,
उन सभी सीमाओं का,
प्रभु तू समर्थ करने में,
वर्षा-वायु, शशि-भास्कर,
गगन-धरा, सबको संपादित,
आ तू शीघ्र कर चंचल मन को नियंत्रित,
मन की चंचल गति को दे विश्राम,
दुःख-हर,
महा-अंध से आच्छादित क्लेश हर,
दे नव-जीवन को नया आयाम!
हे स्वामी!
दे नव-जीवन,
तुझे शत-शत प्रणाम!

❖❖❖

26. दे रहे नव-प्रकाश

हे रक्ताभ भानु!
लिए प्रातः की अरुणिमा,
कर रहे नव-उमंग,
संचारित अवनी आकाश,
भुला विगत अँधियारा,
दे रहे नव-प्रकाश।
प्रभु आते ही
करते जागृत समस्त संसार,
देते अनुभूति अपार।
हे देव!
मेरे जीवन में तेज आपका
समाहित करो,
मेरा जीवन हर-क्षण
अन्धकार में डूब रहा,
दे आलोक इसे,
आलोकित करो।

❖❖❖

27. नयी यात्रा का उद्घोष हो चुका है

हे वत्सल,
अथक लंबी यात्रा कर
थक गया हूँ,
इस मोड़ पर विश्राम चाहता हूँ,
आ अपने अंक में ले,
चीर निंद्रा सुला दे।

नयी यात्रा का
उद्घोष हो चुका है,
मुझे पुनः निकलना होगा,
निरंतर, युग-प्रति युग,
पुनः चलना होगा,
जीवन-दर-जीवन यात्रा का कोई
विराम नहीं, कोई विश्राम नहीं।

मुझे कर्म-ज्ञान दें,
मुझे आस्था के आँचल का,
मुझे स्नेह की थपकियों का,
पुरस्कार दें।

❖❖❖

28. निवारण कर कष्ट

हे जगदीश!
तू अंतर्मुखी विराजित हो,
मनो-कामनाएं विभूषित हों,
विशुद्ध ज्ञान के सम्मार्जन हेतु,
दृष्टि-मध्य समाहित हो,
कर इसे प्रेमाकुल।
हे जगन्नाथ!
पाने को तेरी दया,
बढ़ रही प्रेम श्रद्धा मेरी,
अधीर मन व्याकुल,
आ संयोजन कर चंचल मन
कर इसे प्रेमाकुल।
हे जगदीश्वर!
संचालन कर रहा जगत समस्त,
प्रकट होकर रहा कष्ट ध्वस्त,
बड़े-बड़े कष्ट अनेक,
किये नाथ लोगों के दूर आपने,
अपने कर्मों से व्यथित
नाथ तेरा सेवक हो रहा त्रस्त,
आ शीघ्र निवारण कर कष्ट,
जीवन मार्ग हो स्पष्ट।
कर इसे प्रेमाकुल।

❖❖❖

29. परम आनंद प्रदान करें प्रभु

हे नारायण!
सब उत्पत्ति का मूल स्त्रोत आप ही हैं,
आप सर्व-कारण हैं,
ब्रह्मा-शिव-अग्नि-चन्द्र-सूर्य इत्यादि
आपके परम अंश हैं,
आप समस्त अध्यात्मिक एवं
भौतिक जगत के कारण हैं,
आपका ऐश्वर्य व योग सब में समाहित है,
संपूर्ण भक्ति के मार्ग आप ही हैं,
संशय एवं भय की स्थिति में आप,
आत्म ज्ञान दे उनका विनाश करते हैं,
मुझे आपकी विशुद्ध भक्ति दें प्रभु,
मेरा जीवन आपकी सेवा में अर्पित रहे प्रभु,
मुझे ज्ञान दें प्रभु,
परम संतोष दें प्रभु,
परम आनंद प्रदान करें प्रभु।

❖❖❖

30. पुण्य धरा मातृभूमि को नमन

हे जगदीश!
यज्ञ-धर्म-कर्म की तपोभूमि पर जन्मा,
असंतोष एवं मोह का तिरस्कार कर,
तपोधन, संतोष धन एवं योगधन को प्राप्त किया,
वेद की ऋचाओं,
गीता के ज्ञान,
पुराणों के आदर्श,
उपनिषद के अध्यात्म
के मध्य
सुसंस्कृति से आलोकित हुआ,
मर्यादा, भक्ति, श्रद्धा के मोल को पहचाना,
नाथ मुझे क्या और चाहिए,
पुण्य धरा मातृभूमि को नमन,
बस पुनः पुनः मैं यही जन्म लूँ,
इतनी सी प्राथना स्वीकारें।

❖❖❖

31. पुनर्व्यवस्थित कर

हे सृष्टि रचयिता!
ज्यूँ जलधि की लहरें ले आती है समेट,
बिखरे तिनकों को किनारे,
तू, मेरे बिखरे जीवन को
अपनी अनुरागित तरंगों में लपेट,
पार लगा भवसागर अपने सहारे,
तुम मेरे प्रभु हो,
मैं तेरा दास,
बिखर रही तरंगित शक्तियों को,
पुनर्व्यवस्थित कर
जीवित कर अभिव्यक्तियों को!

हे भगवान्!
मैं अब तुम्हें समर्पित,
सदा के लिए आपका हूँ दास,
आप चाहे तो मार दें,
अथवा करे रक्षा,
शरणागत हूं मैं
दोनों दशाओं में, मैं निराश,
लगा रहूं दिव्य प्रेम भक्ति में,
संवार जीवन मेरा
होऊं न्योछावर तेरी अनुभक्ति में!

❖❖❖

32. प्रभु मुझे आत्म-परायण बना

हे नाथ!
परा-क्रियाओं को
प्रकृति के तीनों गुणों
की प्रतिक्रियाओं से निहित बनाया,
भौतिक जग-बंधन का कारण मात्र,
कर्म फल का आपने प्रमुख उद्देश्य दिया,
समस्त द्वेतों, जग-लाभ
तथा चिंताओं से मुक्त कर,
प्रभु मुझे आत्म-परायण बना प्रभु।

अपने अस्तित्व का संघर्ष कर रहा हूँ,
वैदिक ज्ञान प्रदान कर प्रभु,
आत्म-साक्षात्कार का अनुभव
संज्ञान ला प्रभु,
शीत-ग्रीष्म, सुख-दुःख
हानि-लाभ
से परे पूर्णतया दिव्य अवस्था
प्रदान कर प्रभु।

❖❖❖

33. प्रभु मेरे अंतर्मन को आलोकित करे

हे नाथ!
हर्ष-द्वेष,
मान-अपमान रहित,
जीवन का सृजन कर,
गंध विहीन समीर की भांति,
चंचल मन को एकांकित कर।
पंच-ज्ञानेन्द्रियों को संयोजित कर
मानस पटल पर चित्रित कर।
सतत यत्न-शील बना
आत्म-विवेक को व्यवस्थित कर।
ज्ञान चक्षु खोल,
समस्त विश्व के यथार्थ का दर्शन कर पाऊं,
ज्यूँ भानु-शशि-अनल को प्रकाशित किया,
प्रभु मेरे अंतर्मन को आलोकित कर।

❖❖❖

34. मोती चुन कर मुझे लाना है

हे योग ऋषि।
निर्मोक्ष से मोक्ष तक,
नर से नारायण तक,
अज्ञान से ज्ञान तक
पहुँचने का मार्ग आपने बताया।
जन्म-मरण के भंवर में डोल रहा था,
स्वर्ग-नरक की दहलीज पर खड़ा
मुक्त होने की राह ढूंढ रहा था,
आपने आकर मुझे पार कराया।

मेघों में छुपी वारि बूंदों के सदृश
ज्ञान का अथाह सागर
मुझमें ही छुपा है,
मुझे चिंतन की दिशा दिखा,
आत्म-मंथन करूँ, अंतस तम दूर करूँ,
विज्ञान के महासागर से
मोती चुनकर मुझे लाना है,
इतना ज्ञान दे,
प्रभु, आप महान हो,
मेरा नमन स्वीकार करें।

❖❖❖

35. विकल्प रहित संकल्प करें हम ध्येय प्रथम

हे जगदीश्वर!
आपकी जितनी भी प्रशंसा करूँ, है कम,
कलम मेरी, मात्र भर भी नहीं अब सक्षम,
आपकी कृपा से पाया है यह तन अनुपम,
दिया आपने मोक्ष प्राप्ति का साधन उत्तम।

क्षणिक सुख हेतु भूल गए ये मार्ग हम,
विकल्प रहित संकल्प करें हम ध्येय प्रथम
मोह, क्रोध, लोभ छोड़ बने मानव दृढ़ हम,
लक्ष्य पाने को परीक्षाएं देनी होंगी विषम।

त्याग-श्रद्धा-भक्ति-सत्य-उपासना-सुकर्म,
मोक्ष पाने का मार्ग आपने दिखाया सुगम,
नत मस्तक हूँ प्रभु, सीखा मैंने जीवन मर्म,
जय श्रीकृष्ण, जय श्रीकृष्ण, जय गोविन्दम।

❖❖❖

36. विरक्त न मन तुझसे करना

हे कृपानिधान!
परीक्षाएं ले चाहे जितनी,
विरक्त न मन तुझसे करना,
हृदय-पटल पर हो विराजित,
व्यक्त स्वप्न पूरे तुझमें करना
आशाएं हो धूमिल तो ज़्या,
अनुरक्त नयन तुझसे करना।

हे प्रभु!
उचित कामना मेरी रहे,
अनुग्रहित कृपा तेरी रहे,
अश्रुपूरित नयन तेरी राह में हों,
आग्रहित दया को तन तेरी बांह में हों,
परीक्षाएं ले चाहे जितनी,
विरक्त न मन तुझसे करना।

हे स्वामी!
पथ प्रशस्त कराते रहना,
दीप अभिलाषाओं के जलाते रहना,
काट अंध उर के मन आलोकित कर
अनुभव प्रेम का दिलाते रहना,
परीक्षाएं ले चाहे जितनी,
विरक्त न मन तुझसे करना।

❖❖❖

37. सत्य को मुझमें स्थापित करो नाथ

हे धर्मराज!
सत्य-तप-दया-पवित्रता,
चतुर पदों से श्रृंगारित धर्म की आस्था,
आपने मर्यादित कर रची जीवन व्यवस्था।

सत्य सर्वोपरि बताया आपने,
दान, कीर्ति, लक्ष्मी, सदाचार,
अपूर्ण होते सत्य बिना,
सत्य ही परमात्मा,
सत्य ही नारायण,
सत्यमेव-जयते,
ज्ञान सिखाया आपने
सत्य ही सत्य-परायण।

सत्य-रूपी विशाल वृक्ष की,
रक्षा हेतु पधार,
अनंत फलों का,
प्रसाद सदा देते रहो प्रभु,
सत्य अंत-हीन है,
सत्य को मुझमें स्थापित करते रहो प्रभु।

❖❖❖

38. सूर्यदेव को नमन

हे तरिणी,
जिंदगी के सातों रंग
आपमें समाहित,
आप सप्त-अश्वों के असवार,
करते समय गणना निर्धारित।
भोर की लालिमा लायें आप,
लायें नव स्फूर्ति,
करें नव उमंग प्रवाहित।
हर तम विश्व का,
आपने दिया जग को,
श्रीमय प्रकाश,
दें भवन भास्कर हमें भी,
आलोक,
दिव्य-चक्षु,
करूँ जग आभास।

❖❖❖

39. हे प्रभु कुछ ऐसा ज्ञान दे

हे अंतर्यामी!
कर मुक्त जन्म-मृत्यु के जाल से,
कर निर्भय मुझे,
विजय पाऊं,
पाऊं मुक्ति काल के कराल से।

हो संयमी मेरा मन,
जागृत हो चेतना,
जागृत हो अंतर्मन,
सम्मोहित कर रहे,
क्रोध, मद, मोह, लोभ
इन कुरीतियों का हो दमन।

भौतिक सुख से उठा परे,
कर भय-मुक्त,
मुझे कुछ ऐसा आत्म-ज्ञान दे,
हे प्रभु कुछ ऐसा मान दे।
बस शांति ही शांति हो,
हे प्रभु कुछ ऐसा ज्ञान दे
हे प्रभु कुछ ऐसा मान दे।

❖❖❖

40. हे माँ पद्मासनस्थिते!

आप सिद्ध-बुद्धि, सु-विद्या,
कल्याणकारी-शक्ति प्रदान करें,
आप सब कष्टों का निदान करें,
हे ब्रह्म स्वरूपिणी देवि,
हे जगमाता,
मेरे हृदयस्थल में निवास करें,
आप सर्व शत्रुओं का विनाश करें,

आप आत्मस्वरूप ज्ञान की दाता,
आप मोह पर विजय प्रदाता,
आप सर्वग्य यश लाने वाली,
आप काम-क्रोध आदि दुर्गुण हारिणी,
आप सुख-समृद्धि-वैभव करिणी।

आप मेरे हृदय-पटल पर विराजित हों,
बस इतना निवेदन माँ,
सर्व रूपेण आश्रय प्रेषित हो,
अभिनन्दन माँ।

❖❖❖

41. हे मेरे चंचल मन!

हे नाथ!
जैसे अति-धीर जल-मंथन कर,
सुदृढ़ मोती ढूंढ़ लाते है,
चाहे जल की गहराई कितनी भी हो,
वो घबराते नहीं,
कंचन-सी काया हमने पायी
बुद्धि युक्त चिंतनशील मस्तिष्क भी मिला,
हृदय की गहराई में डूब,
भगवत स्नेह रूपी मोती पाने के लिए।
आप मेरे मन को मनन-शील बनायें।

हे मेरे चंचल मन!
क्यूँ तू इतना अस्थिर हो रहा,
गुरु-रूपी सीढ़ियों का ले सहारा,
पा ले अपने अधिष्ठाता को, शांत कर,
माया की चंचलता में न भरमा,
ज्ञान के तराजू से तौल देख,
माया-मोह-लोभ-कामना,
सभी अस्थायी हैं,
क्षण-भंगुर हैं,
छोड़ अस्थायी, स्थायी को प्राप्त कर।

❖❖❖

42. हे सखा!

हे सखा!
तू सर्वश्रेष्ठ मित्र, तू अभिन्न मित्र,
तेरी यह परम मित्रता,
मेरे जीवन में समाहित हो,
सारे गुण मित्र के, मुझमें समावेशित हो,
निःस्वार्थ हो उपकार, शत्रु तक का न हो अपकार,
सहज-सरल-निष्काम हो मेरी मित्रता,

ज्यूँ अर्जुन ने पाया मित्र
जीत पाया युद्ध महाभारत का,
ज्यूँ सुदामा ने पाया मित्र,
मर्म पाया भक्ति, समर्पण और विश्वास का।
मैं निर्धन ज्ञान से,
अज्ञानी निज पहचान से,
मूढ़ मति मान से।

आ सखे, मित्रता निभाओ,
सुदामा-अर्जुन सी मित्रता।
दो मुझे ज्ञान-धन, संतोष-धन,
विजय पाऊं, हो जन-जन हृदय बसेरा,
मित्र बन लाओ नया सवेरा।

❖❖❖

43. हे सर्वज्ञ शिव!

हे सर्वज्ञ शिव!
आप ही परिपूर्ण हैं,
आप ही निरूस्प्रह हैं,
सर्वज्ञता, तृप्ति, अनादी बोध आप में,
आपने सब ऐश्वर्य दिए,
प्रकृति नियमित अष्ट-तत्व आपसे ही वशीभूत,
आपसे जग ज्योत अनुभूत।

कृपया प्रसाद करें प्रदान,
लुप्त शक्तियों को,
अनन्त शक्तियों में
परिवर्तित कर,
मेरे सर्व दोषों के हलाहल का मान कर,
मुझे कृतार्थ करें।

❖❖❖

44. है मेरा मन अशांत

हे प्रभु!
है मेरा मन अशांत,
उद्वेग-आक्रोश से क्रांत,
तू बरस बन शीतल अमृत धार,
अशांत मन को कर शांत
बुझा आक्रोशित ज्वाला,
हो तन-मन कान्त।

हे नाथ!
ज्ञान दे,
कभी आक्रोश न हो,
हे प्रभु!
मति दे,
कभी उद्वेगित मन न हो,
मार्ग दिखा,
मार्ग वैसा जो कोमल फूलों से
आच्छादित हो,
सहारा दे।

❖❖❖

45. हे, जगत स्वामी!

हे, जगत स्वामी!
सद्बुद्धि दे,
जड़ को कर चेतन,
प्रेम रस कर संचन,
कर मन सरल-विरल,
आस्था के भावों में तरल,
श्रद्धा कर प्रदान,
चलूं सच्चाई के पथ पर,

हे नाथ!
संभाल मुझे,
दे मुझे ज्ञान,
मन में दीप जला,
जीवन आलोकित कर।

❖❖❖

46. हो प्रभु आपकी छत्र-छाया मेरी हर उन्नति में

हे शक्तिमान!
तू अग्निसम सर्व शक्तिशाली,
स्वीकार कर मेरा नमन,
हूँ चरण शरण नतमस्तक
तेरा भक्त करे वंदन,
सुपथ पर चला मुझे,
प्राप्त हो भगवन आशीर्वाद,
पापमुक्त कर मुझे,
उन पापों से किये जो हमने विवाद,
तू सर्व ज्ञानी,
पाप-हर, दया दे,
न हो कोई प्रतिबन्ध मेरी प्रगति में,
पथ दिखा,
हो प्रभु आपकी छत्र-छाया
मेरी हर उन्नति में।

❖❖❖

47. प्रार्थना बस इतनी भगवन!

हे कर्मयोगी!
दे आशीर्वाद
अच्युत न होऊं अपने कर्म से,
आलोकित पथ पर बढ़ते रहे कदम
अडिंग रहूँ,
हिलूँ न सर्व-धर्म से,
सहेज पीड़ा ह्रदय-मध्य,
हो हमेशा गतिशील जीवन,
बना रहे निर्मल मन,
बाँट सकूँ दुःख औरों का,
प्रार्थना बस इतनी भगवन!

हे प्रणेता!
अनुराग-मय हुआ जा रहा,
दिया तूने आत्म-ज्ञान,
भस्म हुआ
समस्त अज्ञान,
चीर निंद्रा में सुप्त था मन मेरा,
तन-मन से अनभिग्य था जीवन मेरा,
लिया इसने आत्म-ज्ञान का संज्ञान!
कृपा बनाये रख,
प्रार्थना बस इतनी भगवान!

❖❖❖

48. बस इतनी सी चाह

हे दीनबंधु!
बस इतनी सी चाह,
जिंदगी को दे एक नयी राह,
छोड़ दे जीवन नैय्या भंवर में बिन पतवार,
दृढ़ साहस दे इतना मुझमें,
हो नाव मेरी मुझसे ही अब उस पार,
हौसले को एक नया नाम दें,
भय को जीवन से अब विश्राम दें
बस इतनी सी चाह को अंजाम दे!

हे सृष्टा!
सृजित कर ब्रह्माण्ड तूने,
मानव को दिया नया आयाम,
सोचने को मन दिया,
भोगने को तन दिया,
धैर्य दिया,
अब छलक रहा यह भरे प्याले सा,
थाम ले इसे
चलूं तुम्हारी निर्देशित राह में,
बस इतनी सी चाह में!

❖❖❖

49. भुवन भास्कर

हे भुवन भास्कर!
अपने तेजोमयी प्रकाश से
आपने अंतस आलोकित किया,
आपकी अरुणिमा ने
धूमिल जीवन प्रफुल्लित किया।

हे सप्त-अश्व-रथी!
वेदों की ऋचाएं आप में अनुग्रहित
गायत्री आपसे उत्सर्जित,
चक्र-काल समस्त आपसे नियोजित,
सप्त-वासरे
दिन-मास-वर्ष
आपमें ही समाहित,
द्वादस राशियाँ आपसे ही संबोधित।

हे अर्क
करुणामयी रश्मियों को
जीवन में प्रवेश दे,
करुणा-उज्वलता-सौज्यता
का विहार हो,
काल-गति पर विचार हो।

❖❖❖

50. मत होने दे मुझे आज निराश

हे, दुःख हरता!
मत होने दे मुझे आज निराश,
आशाओं के दीप जलाये नाथ,
शरण तेरी ला विचारों के क्षीतिज मध्य,
इन्द्रवीर सी कोमल आस
मत होने दे मुझे आज निराश।

हे ज्ञाता!
चीर कलुषित राह पर निकल रहा,
दूर एक अलौकिक दीप जल रहा,
मंद सी ज्योत, आशाओं की ज्योत में,
कर रहा निर्माण अपनी कामनाओं का,
कुंठित न कर इन कामनाओं का प्रभास,
मत होने दे मुझे निराश।

हे दयानिधि!
ले संभाल इन दुर्बल आशाओं को,
कर स्पर्श स्नेहशील वरद हस्त से इन
चंचल भावनाओं को, तरंगित कर,
जड़ हुए मन की लालसाओं को,
रुके न कभी प्रशस्ति राह पर चलने का प्रयास
मत होने दे मुझे निराश।

❖❖❖

51. मनुष्य हूँ मनुष्य बना रहूँ

हे युग प्रवर्तक!
दुर्गुणों से रचित यह देह,
नित्य प्रतिदिन क्यूँ इतना नेह,
कभी काम, कभी क्रोध तो कभी मोह
प्रतिपल, प्रतिक्षण मानवता से विद्रोह,
मद-लोभ में चूर,
आलस्य एवं निराशा भरपूर,
प्रच्छालित करें तन प्रभु,
शुद्ध करें मन प्रभु,
पंच दुर्गुणों से निकल
हो आत्म संयम सकल,
मस्तिष्क हो शांत,
सद्भावना बनी रहे,
मनुष्य हूँ मनुष्य बना रहूँ।

❖❖❖

52. माँ जल्द आ रक्षा करो

हे माँ!
मन आज क्यों विचलित है,
निराशा सभी ओर आच्छादित है,
दिशा हीन हुआ जा रहा हूँ,
तन शिथिल हो रहा है,
हृदय उद्वेलित है,
डूब रहा हूँ
अन्धकार की गहरी कोह में,

माँ आकर संभाल ले,
इस गर्भ से निकाल ले
माँ आपकी दी आशा की एक किरण भी
जीवन संवार सकती है,
माँ चक्षु-पटल में समा कर
ज्ञान की, आशा की,
उमंग की, उत्साह की
नयी रोशनी दो,
माँ जल्द आ रक्षा करो।

❖❖❖

53. मुझे निष्काम भक्ति दें

हे गोविन्द!
नतमस्तक हूँ मैं आपके समक्ष,
मेरी अर्चना स्वीकार करें,
आप अद्युत, अच्युत, अनादि हैं,
अत्यंत रूपों में आपका विस्तार है प्रभु,
आपके सच्चिदानंद स्वरूप का दर्शन दें,
आद्य, पुरातन होते हुए भी,
आप नित्य नौयौवन रूप धारण करते हैं,
आपकी वंदना करता हूँ,
मुझे निष्काम भक्ति दें,
आप पूर्ण परमेश्वर,
मैं अंश रूप जीवात्मा,
इस जीवात्मा को पर लगायें
प्रभु आश्रय दें।

❖❖❖

54. मुश्किलों का हो तर्पण

हे अंतर्यामी!
आह मेरी, चाह मेरी,
व्यथा मेरी, कथा मेरी, दृष्टि-गत तुझे,
अदृश्य नहीं कोई स्वभाव,
निस्पंद हो रहे मेरे भाव,
झांक देख मेरा अंतर्मन,
करूँ कुरीतियों का आगमन,
मुश्किलों का हो तर्पण।

हे विधाता!
विधान तेरा अटल, बाँध विधि के बंधन,
दीन बंधू बने हृदय पटल,
दे दाता श्रद्धा एवं संस्कार,
वेद-मय हो विश्व अपार,
प्रेम-रस तेरे चरण, ये दास का समर्पण,
मुश्किलों का हो तर्पण।

हे ज्ञाता!
ज्ञान दे, भक्ति दे, आत्म-सम्मान दे,
लक्ष्य प्राप्ति की शक्ति दे,
अंतराल के क्षीतिज पर,
पहुँच पाऊं तुझे प्रेम अनुरक्ति दे,
कर दूँ समस्त कष्टों को तुझे अर्पण
मुश्किलों का हो तर्पण।

❖❖❖

55. मेरा कैसा हो कल्याण

हे सुख-कर्ता!
मेरा कैसे हो कल्याण,
मन पर तो मेरे कालिमा छाई,
मेरी दीप शिखा किस विधि जलेगी,
ज्ञान रूपी तेल तो हो चुका समाप्त,
ये जीवन नैय्या बीच भंवर डोल रही,
कैसे पार लगेगी,
कैसे हो प्रभु सुख-शांति प्राप्त।

हे प्रभु!
शीघ्र पधारें,
कराएँ ज्ञानामृत पान,
दिल को शुद्ध करूँ,
ऐसा निवारण करें,
मेरे कलुष हुए जा रहे मन को
करें स्वच्छ,
अंतस में हो परम-सुख भान।

❖❖❖

56. मेरे अंतर्मन को आलोकित कर

हे गुणनिधान!
मेरे बुझे-बुझे गुण,
आपकी तेजोमयी प्रभा से,
पुनः प्रज्ज्वलित होकर,
अंतस में आत्मसात हैं,

आपकी मुखारविंद से
प्रवाहित, ज्ञान-गंगा रूपी
हर साधना नयी दिशा पर
दृष्टिपात है।

त्रिगुणों से रचित मानव शरीर,
कलुषता, छिन्नता, भिन्नता,
से परिभाषित,
आ प्रभु इसे संवार कर
नियोजित कर,
मेरे अंतर्मन को आलोकित कर।

❖❖❖

57. हे जगन्नाथ!

हे जगन्नाथ!
मुझे आत्म तत्व का ज्ञान दें,
मेरी अनादी काल से
जागृत इच्छाओं को
पूर्ण करें,
मैं आप्तकाम
मनीषी की तरह निष्काम
शुद्ध और निर्दोष
बंधन रहित
सर्वज्ञ क्षिद्र रहित
शिराओं से रहित
जीव बनना चाहता हूँ
मेरी मनोकामना
पूर्ण करो॥

❖❖❖

58. मैं अज्ञान के अंधकार में उत्पन्न हुआ था

हे गुरु श्रेष्ठ।
मैं अज्ञान के अन्धकार में उत्पन्न हुआ था,
आपने ही ज्ञान रूपी प्रकाश दे मेरे चक्षु खोले,
मैं एक अनगढ़ पाषाण की शिला था,
आपने उसे तराश कर सुन्दर रूप दिया,
मैं संसार के इस भयावह कृत से विचलित था,
आपने मुझे धैर्य दे भयमुक्त किया,
आपकर चरण कमलों में नमन।

ग्रंथों की मीमांसा में खोया था मैं,
भक्ति एवं प्रेम का रस पिला
आपने ही मुझे तृप्त किया।
परम सत्य से परिचित करा
आपने पवित्रतम दिव्य ज्ञान दिया।
आपने ही व्याकुल चित्त को प्रशांत किया।
स्वामी आप धन्य हैं,
मैं आपके चरण कमलों की शरण चाहता हूँ।

❖❖❖

59. मैं आपका आभारी हूँ

हे कृपालु!
मैं आपका आभारी हूँ,
तूने मनुष्य जीवन किया प्रदान,
दी चिंतन-मनन की शक्ति,
दी भावों की अभिव्यक्ति,
दी भूत भविष्य की पहचान,
तूने हंसना सिखाया, दी मुस्कान,
मैं आपका आभारी हूँ,

हे भक्त वत्सल,
जीवन के दुःख हर,
राग-द्वेष दूर कर,
भक्तिमय अंतस कर,
अनुरागित मन हो मेरा,
हो प्रेम मय जीवन सवेरा,
प्रार्थना करे साधक तेरा,
मैं आपका आभारी हूँ।

❖❖❖

60. मोक्ष प्राप्त करूँ

हे परमात्मा!
इन्द्रियों को वश में करते हुए,
परिपूर्णता प्राप्त करूँ,
लूँ वैराग्य का समर्पण,
जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो,
मोक्ष प्राप्त करूँ,
प्रभु यही कामना है बस।

हे नाथ!
विद्युत गति सा चलित
ये मस्तिष्क,
सुख व दुःख से है परिचित
परम ज्ञान दे,
इच्छा-द्वेष-संघात-अवमानना,
आदि लोभ से परे,
अहिंसा, सत्य, अनुशासन का,
अनुबोधन हो मुझमें,
ऐसी कृपा कीजिये।

❖❖❖

61. हे प्रियतम! वारिद स्वतः

वारिद पर हैं आच्छादित
तिमिर चहुँ ओर,
प्रियतम मेरे!
क्यों नहीं मिलते मुझसे बाह्य द्वार पर
एकांत में,
अपराह्न मैं हूँ व्यस्त जरा
कार्य भार से
इन व्यस्त क्षणों में,
होता हूँ भीड़ में,
परन्तु एकांत में तुम्हारी प्रतीक्षा है,
तुम्हारी अभिलाषा है,
यदि तुम मुझे अपनी सूरत नहीं दिखाओगे
यदि तुम मुझे अकेला एक तरफ छोड़ दोगे
मुझे ज्ञात नहीं
कैसे ये वर्षा के लंबे लम्हें बिताऊंगा,
गगन के अंधेरों में दूर दूर तक
मैं एकटक देखता हूँ
फिर भी
मेरा हृदय
आंदोलित होते हुए
अशांत समीर के झोंकों में भटक जाता है।

❖❖❖

(गीतांजलि की कविता मेघेर पोरे मेघ जोमेछे पर आधारित)

62. मेरे अंदर ब्रह्म ज्योत जलाएं प्रभु

हे शांतिदूत!
मेरे मन की सुई तो मेरे आँगन में ही खोई है,
मूढ़ वृद्ध की भाँति क्यूँ
बाहर ढूंढ रहा हूँ,
अंतस में तो गहन अंध है,
मेरे अन्दर ब्रह्म ज्योत जलाएं प्रभु
मैं अपने अन्दर की शान्ति
अपने अन्दर ही ढूँढना चाहता हूँ,
मोह, लोभ, अहंकार से जड़ित यह देह
अति कष्टकारी है,
इस दुर्गुणों के वृक्ष को तो
जड़ से ही काटना होगा,
जल सिंचन से क्यूँ दूषित कर रहा हूँ,
प्रभु गुरु रूपी कटार दें,
इन बुराइयों को समूल नष्ट करना चाहता हूँ।

❖❖❖

63. मन शुद्ध करना चाहता हूँ

हे नाथ!
रजत एवं स्वर्ण में एक गुण हैं
वे तप कर स्वच्छ हो जाते हैं
मै भी ज्ञानी गुरु के संसर्ग में
तप कर
मन शुद्ध करना चाहता हूँ
भव-बंधन से मुक्त होना चाहता हूँ
पवित्र-अपवित्र
कर्मों से युक्त तमोगुण के
संसर्ग से दूर
प्रभु आपकी सेवा में
लीन होना चाहता हूँ।

❖❖❖

64. मन का दर्पण

हे स्वामी!
मन का दर्पण
अज्ञान की धूल से ढका हुआ है
बादलों पर बादल छा गए हैं,
ज्ञान का प्रकाश
मुझ तक नहीं आ पा रहा है
समस्त मार्ग
अंध की गुहा में जाते प्रतीत हो रहे हैं
अंधकार के बादलों को हटाओ प्रभु
दया के हस्त से दर्पण को प्रच्छालित करो
अंतस आलोकित करो
ज्ञान की आभा से समस्त मार्ग प्रशस्त करो
मुझे शरण में लो।

❖❖❖

65. भवसागर पार करना चाहता हूँ

हे मेरे ठाकुर!
आपकी अनन्य भक्ति के चरणामृत का
आचमन करना चाहता हूँ,
आपके चंचल, भावोत्कर्ष, चिज़हारी नयन का
संमोहित करने वाला आकर्षण
मुझे जगत के प्रलोभन से दूर ले जाता है,
आप की इस दृष्टी का आस्वादन
करते रहना चाहता हूँ,

यह आभावान मुख मंडल,
त्रिलोक के सभी गुणों से समाहित है,
मेरे मानस पटल पर यह असीम
शान्ति का सूख प्रदान करती है,
इस आभा से सर्वदा
आलोकित रहना चाहता हूँ।

सूख-दुःख, लाभ-हानि, शांति-अशांति
आपके दोनों चरणों से प्रवाहित होते हैं,
जीवन के प्रारब्ध से संयोजित हैं,
आपके ये चरण मुझे
अनुकरणीय मार्ग बताते हैं,
इन चरण-रज को मस्तिष्क से लगा,
भवसागर पार करना चाहता हूँ।

❖❖❖

66. ब्रह्म-ज्योति में विलीन कर

हे स्वामी!
द्वेष-पक्षपात विहीन
समभाव समर्पित
चरित्र बने,
हैं सूर्य-चन्द्र उत्पज्ञि प्रकृति जनित
निरंतर कर्म के क्रम में संचालित
रहूँ मैं भी जीवन पर्यंत
कर्म-शील आधारित
मेरे समस्त कर्म प्रभु
आपको हैं समर्पित
चाहता हूँ पाना युक्त-वैराग्य स्थिति,
चिज्ञ रूप दर्पण हो प्रच्छालित।

आत्म-साक्षात्कार को अग्रसर
ब्रह्म-ज्योति में विलीन कर
पूर्णतया ईश्वर अनुमोदित
कर्तव्यों का हो पालन
ऐसी हो कृपा प्रभुवर।

❖❖❖

67. पतित जीवन को आलोकित करें

हे जगत के सृष्टा!
आप में ही संपूर्ण
आत्म-विद्या समाई,
आप ही सर्व विवादों में
सर्व-श्रेष्ठवाद-तत्व,
सत्-धर्म की साक्षात् प्रतिमा आप ही,
आप ही शांत-स्वरूप,
आप ही वेद-सत्व।

आप ही जगत के रक्षक,
आप ही विशुद्ध ज्ञान के भण्डार,
आप ही धर्म-रक्षक,
आप ही अनीतियों के भक्षक।

आप प्रभु,
इस सेवक की त्रुटियों को
क्षमा करें,
पापाचार-अंध से बाहर करें,
आत्म-विद्या के ज्ञान से,
पतित जीवन को आलोकित करें।

❖❖❖

68. डोलती नैया को पार लगाना होगा तुझे

गर्जन कर रही
सागर की ऊँची लहरें
करती उज्ञान-विज्ञान,
पार करना है
दुःख-चिंताओं के इस महा-सागर को
केवट बन आना होगा तुझे,
डोलती नैया को पार लगाना होगा तुझे,

आगे शांत-नीरव-नील
जल भी है,
अंबर भी है
मेरी बाट देख रहा है,

असीम सुख की
चरम सीमा का
आनंद प्राप्त करना चाहता हूँ।

❖❖❖

69. ज्ञान यज्ञ का प्रारंभ हुआ

हे गुरुदेव!
ज्ञान यज्ञ का प्रारंभ हुआ
आपकी कृपा से,
जीवात्मा और परमात्मा का मिलन
ही संपूर्ण योग है,
ज्ञान योग, ध्यान योग, कर्म योग ही
सत्य परम सत्य,
अनुव्यवस्थित इसी में,
आलोकित इसी में,
ब्रह्म का आत्मा से
साक्षात्कार करा कर
ज्ञान-साधना से अभिभूत किया,
देह का अभिमान त्याग
निर्विकल्प समाधिस्थ
स्थिति प्राप्त कराएँ
अनुग्रहित करें।

❖❖❖

70. खोई सभ्यता

हे कृपालु!
मोह भ्रमित
क्रोध जनित,
खो गयी मानवता कहाँ,
मनुज जल रहा
द्वेष की अनल में,
अर्थ प्रधान है अब
संबंधों की सत्यता कहाँ।

कुत्षित हुआ जा रहा मन
संसर्ग में आकर कलुषता के,
पावन कर नाथ अब
ढूंढ रहा अंश मनुष्यता के।
राम का पुरुषार्थ हो,
कृष्ण का धर्म,
लौटा दे नाथ अब दिन
खोई सभ्यता के।

❖❖❖

71. काष्ट की देह में मोह की दीपक लगी है

हे रमा रमण!
रक्षा कीजिये इस सेवक की
भय से व्याकुल हो रहा हूँ,
आप हैं
गुणशील
कृपा के परम स्थान,
द्वन्द समूह के संहारक,
पृथ्वी के पालक
दीन पर दया-दृष्टि डालिए
दैहिक-दैविक-भौतिक ताप से कल्याण करिए
कामरूपी भील ने
मनुज रूपी मृग को
भोग रूपी वाण से आहत किया है,
हे तारण-हार
पामर अनाथ की रक्षा करें,
काष्ट की देह में मोह की दीमक लगी है,
मेरी बुद्धि मलिन है
माया आपार बलवान है
प्रभु आ शीघ्र मुझे मुक्त करवाएं।

❖❖❖

72. मोक्ष का अनमोल रत्न

हे गोविन्द!
कनक तप तप चमकता है,
चन्दन घिस घिस महकता है,
दही मथ मथ मक्खन बनता है,
प्रभु आप में डूब डूब ज्ञान मिलता है।

मैं प्रभु आत्म-चिंतन कर
आप में डूब जाना चाहता हूँ,
जीवन के इस समुद्र मंथन में,
मोक्ष का अनमोल रत्न
प्राप्त करना चाहता हूँ।

पंच तत्वों से निर्मित यह तन,
पंच तत्वों में विलीन होना चाहता
समग्र साधनाओं से समाहित,
यह आत्मा अब आपमें,
प्रवेश कर जाये
कामना यह स्वीकार करें प्रभु।

❖❖❖

73. एक ही राह

हे नाथ!
रात्रि के गहन अन्धकार में,
प्रकाश की अभिलाषा छुपी होती है,
मेरे अन्त: करण में तुम्हें पाने की
अथाह चाह छुपी है,
मेरा हृदय स्पंदित होता है तो मात्र
आपके नाम से,
पुकारता है तो मात्र आपके नाम को।

तुम्हारी चाह की
मेरे अंतर्मन में कोई सीमा नहीं,
पुराने सभी मार्गों की दिशा
अनभिज्ञ हो जाती है,
जब तुम्हें समक्ष पाता हूँ,
बस बच जाती है,
एक ही चाह,
एक ही राह।

❖❖❖

74. उद्यात-शुद्ध-ज्ञान का हो दर्शन

हे नाथ!
हो रहे भष्म-सात
जल कर तेज ज्ञान अनल में
समस्त भौतिक पाप कर्म,
हो पूर्ण आत्म-ज्ञान प्राप्त मुझे
कृपा करो प्रभु कुछ ऐसी,
कर्म फलों की तो होती तीन अवस्थाएं
शुभारम्भ-बीज-संचित,
नाथ शीश पर हाथ यूँ दीजिये
कर सकूँ इन सभी को विजित
उद्यात-शुद्ध-ज्ञान का हो दर्शन
यथा अंतराल में
ध्यान-साधना-सिद्धि का,
हो अंतर्मन में आस्वादन।

❖❖❖

75. इस अवगुंठन को दूर करें

हे भगवान!
भौतिक-आध्यात्मिक सभी वस्तुओं के
आप ही पालनहार हैं
आप ही की कृपा से सृजन-विसर्जन होता है
उन वस्तुओं का।
सत्य-धर्म
भक्ति-योग का पूर्ण सिद्धांत है
मैं उसकी सेवा में लगा हूँ,
कृपया सत्य-धर्म का साक्षात्कार कराएँ
मेरी रक्षा करें
अपनी ब्रह्म-ज्योति की किरणों से
इस अवगुंठन को दूर करें
आपके सच्चिदानंद स्वरूप का
दर्शन करना चाहता हूँ।

❖❖❖

76. आप परम आद्य ज्ञेय निहित

हे प्रभु!
आप परम आद्य ज्ञेय निहित हैं,
आप ब्रह्माण्ड के आधार हैं,
आप अव्यय और वेद हैं,
सनातन साक्षात् ब्रह्म आप ही हैं,
आप प्रज्ज्वलित अनल की भांति प्रखर हैं,
आप ही तेजोमय स्वरूप हैं,
आप ही अनन्त है,
आप ही सर्वत्र हैं,

नाथ,
मैं मोह ग्रस्त,
राग-द्वेष से त्रस्त,
समस्त अवगुणों से प्रभावित,
यह दूषित देह,
आपके चरणों में अर्पित
दिव्य-ज्ञान दें,
मुझे शुद्ध करें,
आप निज में निहित करें।

❖❖❖

77. असमंजस एवं भय को दूर करें

हे प्रभु!
घने कोहरे से आच्छादित गगन
ज्यूँ तरणि-रश्मियों से विच्छेदित हो
स्वच्छ निर्मल हो जाता है
प्रभु! मेरे मन के कलुष को भी
आप प्रच्छालित करें,
मेरे हृदय में विद्यमान
असमंजस एवं भय को दूर करें

सफलता-विफलता की अनिश्चितता
आशा-निराशा
सुख-दुःख की विषमता में
यह प्राण धारी जीव डोल रहा है
प्रभु! मेरे हृदय में निवास करो
मेरे चंचल मन को मर्यादित करो।

❖❖❖

78. अमृतधारा का उत्सर्जन कर

हे पुरुषोत्तम!
मन-वचन-कर्म से
आपका हूँ,
आपमें समाना चाहता हूँ,
परमार्थ को यथार्थ कर प्रभु,
अज्ञान का नाश कर,
विवेक प्रदान कर,
मोह रूपी भ्रम को दूर कर,
ज्ञान-वैराग्य-भक्तिरस की
अमृत धारा का उत्सर्जन कर
मेरे प्रारब्ध मुझे अशांत कर रहे,
मधुर स्नेहनुभुती का आभास कर पाऊं
मेरे चिज़ को शांत कर।

❖❖❖

79. अभिलाषा

हे नाथ!
वाह्य अंध करने दूर
दीप कई जला चुका
अब तो अंतस-दीप जलाना है,
उजालों की कोई नहीं चाह

सागर तट बैठ बैठ गोते कई लगा चुका
अब प्रीती-सागर में डूब जाना है
किनारों की कोई नहीं चाह

गर्जन करते बादलों की मेह में
कई बार नहा चुका अब ज्ञान-मेह में नहाना है
भौतिक ज्ञान की कोई नहीं चाह

प्रकृति के त्रि-गुणों से निर्मित
देह यह बहुत भोग चुका
अब सप्त-तापों से छुटकारा पाना है
सांसारिक सुखों की कोई नहीं चाह

विषय-भोगों में समय व्यतीत हो रहा
कितना और काल गंवाना है
अब तो आ जाओ गोविन्द-हरे
चरण-शरण मात्र की चाह।

❖❖❖

80. अज्ञान के सागर को निश्चय ही पार कर सकूँगा

हे महान परमेश्वर!
प्रिय तथा अप्रिय परिस्थितियों के
संयोग-वियोग के कारण
स्वर्ग-नरक की शोचनीय स्थिति के कारण
संताप की अग्नि में जल रहा हूँ,
कई औषधियां दी आपने प्रभु
इस दुखमय जीवन से उबरने को
किन्तु ये औषधि दुखों से भी अधिक
कष्टकारक हैं
सोच रहा हूँ कि
एक मात्र औषधि
आपकी सेवा में संलग्न होना है
कृपया मुझे ऐसी सेवा का उपदेश दें।

मुक्तात्माओं की संगति
आपकी दिव्य-प्रेमा भक्ति
से ही मैं प्रकृति के त्रिगुणों के स्पर्श से
पुर्णतः कल्मषहीन हो सकूँगा
अपने प्रिय स्वामी का कीर्तन कर सकूँगा
मैं ब्रह्म तथा उनकी परंपरा के पद चिन्ह पर चल कर
आपकी महिमा का कीर्तन करूँ
अज्ञान के सागर को निश्चय ही पार कर सकूँगा
ऐसा आशीर्वाद दें।

❖❖❖

81. अज्ञान का निवारण करो

हे स्वामी!
आच्छादित घने मेघों में छिपे,
तारागणों का अन्तर्निहित प्रकाश,
अस्तित्व विहीन नहीं हो सकता,
भ्रम-वश मैं क्षणिक विमुख तो हो सकता हूँ,
परन्तु नाथ,
इस अंतर्मुखी तेजोमयी स्वरूप
की आभा से कभी दूर नहीं हो सकता।

अहंकार रूपी ग्राह ने
मुझे संसार-सागर में जकड़ रखा है,
गजराज बना मैं,
विश्व के समस्त मोह रूपेण संबंधों
के अंतरजाल में फंसा हूँ,
निष्काम कर्म से मेरे
अज्ञान का निवारण करो,
यथोक्त फलों का अनुष्ठान करो।

❖❖❖

82. आप मुझे जागृत करें

हे प्रभु!
जागृत रहूँ मैं,
कर सकूँ प्राप्त ज्ञान
उन श्रेष्ट पुरुषों से
तत्वज्ञ हैं जो
ज्ञान का मार्ग तो
छुरी की तरह
तीक्ष्ण और दुस्तर धार सा
दुर्गम है
जब तक मृत्यु दूर है
जब तक वृद्धावस्था नहीं है
जब तक शरीर रोगाक्रांत नहीं हुआ
मुझे आत्म कल्याण का
कार्य कर लेना है
मुझे शाश्वत जग में
जन्म सुधार लेना है
आप मुझे जागृत करें।

❖❖❖

83. तन शांति का अनुभव करे

मस्तिष्क की विह्वल तरंगों में शांत रस भर दें,
नयनों की अंजुली में प्रेम-सुधा-रस पान कर दें,
वक्षस्थल में अनुपम शांति का निर्वहन हो,
द्वन्दातित बन अभितज्य बनूँ,
समग्र देह में शिरोत्पाद शांति का वरण हो,
तन शांति का अनुभव करे
मन शांति का अनुभव करे,

अंतर्मन के दर्पण में उद्विग्न छवि शांत एवं शीतल हो,
स्वत: धीरे धीरे मन हो एकाग्रचित
निंद्रा रूप में प्रभु मन हो स्थित हो आराध्य पुष्प सृजित
तन शांति का अनुभव करे मन शांति का अनुभव करे,
यात्रा पर निकला यह मन आनंद धाम ही है गंतव्य
मध्य की कलुषता का कर निवारण
हो मन सहज-शांत-आनंदचित्
तन शांति का अनुभव करे मन शांति का अनुभव करे,

क्षमता के दायरे होते जब सीमित,
होता है अंतस अशांत एवं तृष्णित
शब्द को बना प्रेरणा सामर्थ्य हो असीमित
तन शांति का अनुभव करे
मन शांति का अनुभव करे।

❖❖❖

84. मानव बनाना चाहता हूँ

हे नाथ!
पाषाण की मूर्तियाँ
तभी पूजनीय होती हैं
जब
उन्हें सहना पड़ता है दर्द
तराशे जाने का,
उन्हें सहना पड़ता है दर्द
सीने पर चोट खाए जाने का,
आघात तो कई खा लिए
आ मेरे प्रभु
मुझे तराश दे
मैं देव तो नहीं
अपितु
मानव बनाना चाहता हूँ।

❖❖❖

85. परिवर्तन

हे नाथ!
जगति तो है गतिशील
प्रतिदिन परिवर्तनशील
बाल्यकाल से निवृति तक
हर क्षण हर पल बदलती यह उद्देश्य
बदलते रहते ध्येय
सूर्य वही रहता, चन्द्र वही रहता
परन्तु बदल बदल हर दिन देते
एक नयी ताजगी, एक नया आयाम
शीतलता, उष्णता का
नित नया प्रमाण जल की बूंदें
गिरते हुए दिखती हैं ओस की बूंदें
गिरते हुए नहीं दिखती बल्कि
उषा की प्रथम किरणों के साथ
अहसास होती हैं,
आँखों को शीतलता देती हैं,
क्यूँकि ओस की बूंदों में
परिवर्तन निहित है,
प्रकृति से परावर्तित
एक क्रिया बिम्बित है,
मुझे परिवर्तन की गतिशीलता
में अनुमोदित होने दो,
नाथ! मुझे पल प्रतिपल
समय के साथ बदलना सिखाओ।

❖❖❖

86. मेरे भाव प्रभुमय हो जावें

मेरे गोविन्द!
आपकी शक्तियां तो विविध है,
अनंत हैं, असंख्य हैं,
मैं मूढ़,
मैं अल्प मति मेरी बुझ से परे यह रहस्य,
मनन अध्यन करने के पश्चात
त्रिशक्तियों को बताया वेदों ने,
परा-शक्ति है दैविक जीव,
भौतिक शक्ति जीवन
अविद्या कर्म शक्ति तामसी
प्रवृति का द्योतक,
प्रभु मृत्यु पर्यंत अपरा शक्ति में निहित रहा
अध्यात्मिक परा शक्ति में समावेशित करो,
मै अंत समय मात्र आपका
चिंतन करना चाहता हूँ,
मेरे भाव प्रभुमय हो जावें,
मेरी प्रार्थना स्वीकार करो।

❖❖❖

87. मोह की कलुषता दूर कर

हे नाथ!
अंतस में बादलों के ऊपर
बादल आ गए हैं,
गहन अन्धकार छा गया है,
अलोक मय कर
मुझे वाह्य-द्वार पर ले चल,
मोह की कलुषता दूर कर,
मुक्त हो
तुझमे विलीन हो जाऊं।

समस्त जीव जन्म लेकर
अनुराग, इच्छा, द्वेष में उलझ
मोहासक्त होते हैं,
परन्तु
मैं आपके चरणों में विराजित हूँ,
मुझे मोह के द्वन्द से मुक्त कर,
परमेश्वर पूर्ण चेतना दे,
जरा-मृत्यु के बंधन से मुक्त कर।

❖❖❖

८८. मोह वन में भटक रहे हैं

हे नाथ!
आपके कमल नयन
मेरे हृदय को
अथाह शांति प्रदान करते हैं
मन के अश्व तो बहुत चंचल हैं
बहुत अशांत है,
विद्युत गति से तीव्र ये
संसार के
मोह वन में भटक रहे हैं
त्रितापों से मुक्त होना है,
तप-त्याग के अंकुश से,
इन अश्वों को नियंत्रण में लेना है,
आपके राजीव-लोचन
मेरे नियामक हैं,
इन नेत्रों का
मनोहारी दर्शन
चित्त शांत करता है,
मन के अश्व
संयम में रहते हैं,
इन नेत्र-दृष्टि से
सदा कृपया बनाये रखें।

❖❖❖

89. राग द्वेष के दो

हे नाथ!
राग द्वेष के दो
जानवर
मेरे ह्रदय कूप में
उतर रहे हैं
कूप के जल को
दूषित कर रहे हैं
दूषित जल निकाल-निकाल
थक गया हूँ,
ओ नाथ
ज्ञान की विधा से
मन को परीक्षालित कर
दो जानवरों को
निकाल बाहर कर
शुद्ध मन से शुद्ध
विचारों का सृजन कर।

❖❖❖

90. शुद्ध भावनाएं प्रज्ज्वलित हों

हे ईश्वर!
अंतस के शतदल पर
अनितियों की जल-बूँदें स्थिर न हों,
स्वच्छ सु-संस्कृत विचारों का निवास हो,

मन-कर्म-वचन से
प्रयत्नशील हूँ,
असत्य और कुरीतियाँ,
मुझमें प्रवेशित न हो,
आप मुझमें समाएं,
मेरे अन्तः करण में,
विवेक और ज्ञान को
प्रकाशित करें,

अँधेरे के एकांत में,
शुद्ध भावनाएं प्रज्ज्वलित हों,
मैं शांत, सौम्य, मधुर
निंद्रा में जाना चाहता हूँ।

❖❖❖

91. संसार-वन में दौड़ती

हे जग-स्वामी!
आकांक्षाओं और कामनाओं से युक्त यह देह
अनन्त वासनाओं से ग्रसित यह देह
बुद्धिमान तो है
परन्तु
ज्ञानवान नहीं,
चंचल मन के वशीभूत
कस्तूरी खोजती
मृग की भांति
संसार-वन में दौड़ती रहती है,
अनेक कष्टों को भोगती है,
दुखी होती है,
परन्तु
उसे ही सुख की पराकाष्ठा जानती है,
तत्काल आ प्रभु
मुझे इस सांसारिक-वन से मुक्त करा।

❖❖❖

92. समभाव के दर्शन की इच्छा है

हे नाथ!
आप से प्रभावित हुआ
तन मन प्रकाशित हुआ,
ज्ञान-पुंज प्रभासित हुआ
अन्धकार की गुहा में भटक रहा था
अंतस मोहाग्नी से तप रहा था
शीतल समीर का झोंका आया
प्रभु के चरणों को पाया
दीप ज्ञान का प्रकाश लाया
द्वंदात्मक भाव दूर हुए
समभाव के दर्शन की इच्छा है।

❖❖❖

९३. हे परम पिता परमेश्वर!

हे परम पिता परमेश्वर!
दयालु आप-कृपालु आप
जीवन को पूर्ण करने को
बिन मांगे, दी आपने,
यह पवन-यह अगन यह जल-यह थल
यह आकाश-यह प्रकाश।

बनाई सृष्टि इतनी मोहक
लालिमा लिए गगन सन्देश देते बादल
ये बदलती ऋतुएं
ये पर्वत-ये झरझर झरते झरने
ये नदियाँ-ये सागर
चहचहाते खग-दौड़ते मृग।

बिन अभिलाषा बनाया मनुष्य आपने
धर्म-कर्म का बताया मर्म आपने
अब मेरी बारी है
पशु न रहूँ, बनूँ मनुज
कर्तव्य बोध हो,
आपसे अनुरोध हो,
सरल बना-उत्कृष्ट बना
नूतन वर्ष मधुर बना।

❖❖❖

94. हे महादेव पुनः नीलकंठ कहलाना है

हे महादेव!
युग कल्मष तत्व से ग्रषित है,
संबंध समूचे स्वार्थ निहित हैं,
ताप-त्रय से विश्व आज दूषित है,
घोर अनाचार छा रहा,
आज तो अंबर भी बादलों के नीचे आ रहा,
अहंकार-मद आज हावी हो रहे,
अज्ञानता के सताए इंसान आज
धर्म के अर्थ की निज व्याख्या कर रहे,
सत्ता लोलुप जनहित छोड़ निज हित में खो रहे
मनुज मनुज के तन का भूखा है,
सत्य-तप दया जीवन से अनदेखा है,
मनुष्य को मनुष्य बनाना है,
कलयुग की कलुषता का गरल
पुनः कंठ में बसाना है
हे महादेव पुनः नीलकंठ कहलाना है।

❖❖❖

95. हे महादेव हमें शरण में लें

हे शिव!
त्रिगुण मयी जगत ही बंधन रूप है,
आपके वंदन से ही मनुज गुणातीत होते हैं
आपके वंदन से ही त्रय ताप भाष्मित होते हैं,
अतः आप कहलाते त्रिपुरारी
आपके गले का सर्प
अभिमान, क्रोध, मोह आदि दोष का द्योतक है,
आप इसे वरण कर हमें मुक्त करते हैं,
आपका वाहन वृषभ धर्म है
आप नित्य धर्म पर आरूढ़ रहते हैं
जगत की अथार्थ विभूति आपसे है,
अतः आप इसे सर्वदा तन से लगा कर
जग को अभिभूत करते हैं
संपूर्ण चराचर भूत आपके अधीन है
आप भूतनाथ हैं
आपके प्रत्येक अंग-प्रत्यंग
अध्यात्म दर्शाते हैं
हे महादेव हमें शरण में लें।

❖❖❖

९६. त्रिवर्गीय संतुलन में बनाये रखें

हे प्रभु!
धर्म-अर्थ-काम
वेदानुसार त्रिवर्गीय आयाम
शिक्षा,
आत्म साक्षात्कार,
भौतिक कर्मकांड
विधि व्यवस्था
विज्ञान और जीविका अर्जन के साधन
सभी साधनों को
आपके चरण कमलों में समर्पित है
धीर तथा दक्ष पुरुष
करते आत्मा का अनुसंधानिक विश्लेषण
शुद्ध मन से
पालन तथा संहारक समस्त वस्तुयें
आत्मा से संबंधित एवं अंतर रूप है
प्रभु जीवन को
त्रिवर्गीय सन्तुलन में बनाये रखें।

❖❖❖

97. हे शांतिदूत!

हे शांतिदूत!
मेरे मन की सुई तो मेरे आँगन में ही खोई है,
मै क्यूँ उसे बाहर ढूंढ रहा
अंतस में तो गहन अंध है,
मेरे अन्दर ब्रह्म ज्योत जलाएं प्रभु
मैं अपने अन्दर की शान्ति
अपने अन्दर ही ढूँढना चाहता हूँ,
मोह, लोभ, अहंकार से जड़ित यह देह
अति कष्टकारी है,
इस दुर्गुणों के वृक्ष को तो
जड़ से ही काटना होगा,
जल सिंचन से क्यूँ दूषित कर रहा हूँ,
प्रभु गुरु रूपी कटार दें,
इन बुराइयों को समूल नष्ट
करना चाहता हूँ।

❖❖❖

९८. मैं क्षणिक विमुख तो हुआ

हे स्वामी!
आच्छादित घने मेघों में छिपे,
तारागणों का अन्तर्निहित प्रकाश,
अस्तित्व विहीन नहीं होता,
भ्रम-वश मैं क्षणिक विमुख तो हुआ,
परन्तु नाथ,
इस अंतर्मुखी तेजोमयी स्वरूप
की आभा से कभी दूर नहीं हुआ।

पुष्पों में समाहित सुगंध की भांति,
आप दृष्टीमान तो नहीं,
परन्तु प्रत्येक स्थान पर विद्यमान हैं,
आपकी यह दया रूपी सुगंध
मुझे सुरभित करती रहे,

आपकी कल्याणकारी दृष्टि
अवचेतन शरीर को चेतन कर देती है,
स्पंदित अंतस, प्रेमानुराग से ग्रसित
विह्वल तुम्हारे दृष्टिपात को आतुर है,
मुझे अनुग्रहित करें।

❖❖❖

९९. हृदय की घोर जड़ता पर प्रहार करिए

हृदय की घोर जड़ता पर प्रहार करिए
मन की चंचल कल्मषता पर वार करिए

न जाने क्यूँ और कब
अज्ञान के गहन सागर में डूब गया हूँ
मुझे शक्ति दीजिये
मेरा प्रयास सफल हो जाए
मैं अपनी घुटन और व्यथा से उबर जाऊं

मुझे आशीर्वाद दीजिये
मैं समर्थ हो जाऊं
नित्य की तुच्छ एवं दैहिक वस्तुओं से
मेरा मन विचलित न हो,

मैं इतनी शक्ति अर्जित करूँ
अपनी शक्ति को तुम्हारी प्रेमानुभूति
मनो-शक्ति में समावेशित करूँ।

❖❖❖

100. चपला की चलायमान

हे नाथ!
एक दीप जला अंतस में
दीप जो प्रदान करे एक उष्ण उर्जा
एक तीव्र चाह कुछ करने की
अंतस के तिमिर को दूर कर
आलोकित करें मस्तिष्क की शिराएँ

आषाढ़ के गहन वारिद
रात्रि से शांत मोहित करते
मन:स्थिति को रोमांचित करते
विचर रहे हैं

पुरवैया की सनसनाहट
और एक यवनिका अम्बुधर की
प्रात: के चक्षु पटल बंद कर
नित्य जागृत नील गगन
को ढक अंतस को जागृत
करती है

द्रोह, कलुष, अवगुण
के तिमिर को आत्मसात कर
दीप प्रज्ज्वलित करती
ये मेघ माला
चपला की चलायमान प्रभा से
प्रभावान, दीप्तिमान करे
यही प्रार्थना प्रभु।

❖❖❖

101. हे प्रभु समस्त संताप हरो

हे योगेश्वेर!
त्रय तापों से मुक्त होने को
कोटिशः मनुष्य करते प्रयत्न
कृपा करते आप उन पर ही
जो आप के भक्ति-योग का संवरण करते
धर्म के चार स्तंभ सत्य-तप-दया-दान
इन पर चल कर भव-सागर से होता निदान
राग-द्वेष-क्लेश-कपट आदि से निवारण हो
आपके चरण-कमलों से तारण हो

तप-अर्थ-काम-मोक्ष
चार चरण कर्मयोग के
जीवन घुमता इस वृत में
निष्काम कर्म ही उपासना
निष्काम कर्म में नहीं होती कोई कामना

अज्ञान के सुमेरु को
ज्ञान योग से विध्वंश करो
हे प्रभु समस्त संताप हरो।

❖❖❖